International Journal of Hindi Research
www.hindijournal.com
ISSN: 2455-2232
Received: 26-06-2024, Accepted: 28-07-2024, Published: 14-08-2024
Volume 10, Issue 3, 2024, Page No. 34-36

दिनकर के काव्य में इतिहास दृष्टि

शालिनी शुभा
हिंदी विभाग, भूपेंद्र नारायण मंडल विश्विद्यालय, मधेपुरा, बिहार, भारत

सारांश
इतिहास का महत्व अत्यधिक व्यापक और गहरा है, क्योंकि यह न केवल अतीत की घटनाओं और तथ्यों का संग्रह है, बल्कि समाज, संस्कृति, और सभ्यता के विकास की कहानी भी है। इतिहास हमें यह समझने में मदद करता है कि अतीत की घटनाओं और निर्णयों ने वर्तमान को कैसे आकार दिया है। इससे हम भविष्य की दिशा निर्धारित कर सकते हैं और उन गलतियों से बच सकते हैं जो अतीत में की गई थीं। इतिहास हमें अपनी संस्कृति, परंपराओं, और मूल्यों को समझने में मदद करता है। यह हमारी पहचान का एक महत्वपूर्ण हिस्सा होता है और हमें यह जानने में सहायता करता है कि हम कौन हैं और हमारी विरासत क्या है। रामधारी सिंह 'दिनकर' हिन्दी साहित्य के प्रमुख कवि और लेखक हैं, जिनकी रचनाओं में इतिहास बोध प्रमुखता से उभरता है। उनकी कविताओं और गद्य रचनाओं में भारतीय इतिहास, संस्कृति, और परंपराओं का बखूबी चित्रण किया गया है। दिनकर की रचनाओं में भारतीय संस्कृति और सभ्यता के गौरव का वर्णन है। उनकी कविताओं में इतिहास के गौरवशाली पक्षों का वर्णन किया गया है, जिससे पाठकों में अपने देश और संस्कृति के प्रति गर्व की भावना उत्पन्न होती है।

मूल शब्दः इतिहास, संस्कृति, राष्ट्रीयता, परंपरा, मूल्यों, बोध

विषय प्रवेश

इतिहास शब्द की उत्पत्ति को लेकर इतिहासकारों की महत्त्वपूर्ण कथन दखने क मिलता है। संस्कृत भाषा में इतिहास शब्द को इति+इ+आस' इन तीन शब्दों का शंसलिष्ट रूप माना गया है। इतिहास का अर्थ है निश्चित रूप से ऐसा हुआ होगा। अंग्रेजी भाषा का शब्द 'हिस्ट्री' शब्द यूनानी भाषा के 'हिस्टोरिय' शब्द से निकला है, जिसका अर्थ है–अन्वेषण, शोध, खोज या ज्ञानकारी होता है। इस प्रकार एक व्यापक रूप से 'इतिहास' मनुष्य के उद्‌गम और विकास का व्यवस्थित लेखा–जोखा है।

विशिष्ट इतिहासकार लालबहादुर वर्मा इतिहास के बारे में महत्त्वपूर्ण बात करते हुए लिखते हैं "मनुष्य जाने या न जाने उसका अस्तित्व इतिहास से परे नहीं होता। इतिहास का उत्तराधिकारी मनुष्य उसे जीता हुआ, अपने कार्यो द्वारा उसे प्रभावित आर्ट हुआ भी प्रायः उससे परिचित नहीं होता। इतिहास शब्द का विभिन्न संदभो में वह प्रोयोग करता है दृ व्यक्ति, देश, साहित्य, विज्ञान, पशु, यहाँ तक की वस्तुओं तक के इतिहास कि वह बात करता है।" [1]

उपोरोक्त कथन से यह स्पष्ट है कि इतिहास मनुष्य का जीवित अतीत है। यह शताब्दियों के दौरान मनुष्य द्वारा अपने अतीत को पुनर्निमित वर्णित और व्याख्यायित करने का प्रयास है।

प्रसिद्ध अरब इतिहासकार इब्न खुल्दुम के अनुसार–"इतिहास क्रांति तथा राजनीतिक विपल्व के फलस्वरूप युद्ध, सात्विक परिवर्तन, सांस्कृतिक विश्व, समाज मानव पतन का वृतांत है। राष्ट्र के उत्थान चूँकि इतिहासकार, घटनाओं के दृष्टा तथा प्रायः उनके भागीदार हैं। इसलिए आम तौर पर घटनाओं का विवरण अपने समय के परिप्रेक्ष्य में करते हैं।"[2]

उपोरोक्त कथन के माध्यम से खुल्दुम ने स्पष्ट किया है इतिहासकार का लक्ष्य अतीत की यथासंभव सच्ची तस्वीर पेश करना। अतीत की घटनाओं की सच्चाई तक पहुंचने के लिए विकसित किए गए तरीके को ऐतिहासिक पद्धति कहते हैं।

इतिहास की तरह ही समाज विज्ञान के अन्य विषय समाज में मनुष्य की स्थिति का अध्ययन करते हैं। जिसके दायरे में परिवर्तन की समस्या भी आ जाती है। लेकिन आर्थर मार्विक लिखते हैं "जो बात इतिहास की अन्य अनुशासनों से अलग करती है वह है कालगत परिवर्तन के तत्व की विशेष चिंता समाज विज्ञानी समाज में मनुष्य को गतिविधियों में दृष्टिगोचर समान तत्वों और नियमित पैटर्न की तलाश करता है। इतिहासकार अलग–अलग कालावधि ने समाज के अंतर को देखता है कि कालक्रम में समाज और विकसित और परिवर्तन हुए।"[3]

इब्न खुल्दुम के अनुसार – "इतिहास – मानव – समाज, विश्व संस्कृति सामाजिक परिवर्तन युद्ध, क्रांति तथा राजनीतिक विप्लव के फलस्वरूप राष्ट्रों के उत्थान – पतन का वृतांत है।" [4]

इस प्रकार इतिहास और मनुष्य के बीच का संबंध गहरा और जटिल है। इतिहास मनुष्य के अनुभवों, घटनाओं, और उपलब्धियों का संग्रह है, जो समय के साथ बदलता और विकसित होता रहता है। यह मनुष्य के सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक, और आर्थिक जीवन को प्रभावित करता है और उसे एक दिशा देता है। इतिहास हमें हमारी सांस्कृतिक धरोहर से जोड़ता है। यह हमें बताता है कि हमारे पूर्वजों ने क्या किया, उन्होंने किन परिस्थितियों का सामना किया, और उन्होंने कौन–कौन सी उपलब्धियां हासिल कीं। इतिहास से मनुष्य को उसकी पहचान मिलती है। यह उसे बताता है कि वह किस संस्कृति, सभ्यता, और परंपरा से संबंधित है। यह उसकी सामुदायिक और राष्ट्रीय पहचान को मजबूत करता है।

दिनकर ने अपने काव्य में मानव समाज, विश्व संस्कृति युद्ध, क्रांति, द्वंद आदि विषयों पर तथा इतिहास के कई रचना में प्रतिविंबों को रेखांकित किए हैं। अपने लेखन में दिनकर मानवीय पक्ष को दिखाते ' इतिहास किसी भी जाति को दो बार क्षमा नहीं करता' में लिखा है "भगवान करे की लड़ाई अब न हो और भारत की खोई हुई प्रतिष्ठा शांति और सद्‌भावना के मार्ग से अगर की जा सकती है, तो प्राप्त कर ली जाय।" [5]

दिनकर के अनुसार अहिंसा परम धर्म है और हिंसा अप धर्म है। लेकिन भारत के इतिहास में ऐसे दृष्टांत बहुत है जिनसे पता चलता है कि जब–जब हमने आपद धर्म का अनादर किया तब–तब हमारा परम धर्म अपने आप नष्ट हो गया।दिनकर लिखते हैं –

"विशेषतः गाँधी जी की अहिंसा कायरों की अहिंसा नहीं वीरों की अहिंसा थी। उनकी अहिंसा में आग थी, जवानी का तेज था प्रेम था, आहुति धर्म की ज्वाला थी।"[6]

दिनकर अपने रचनाओं में भारत के धरोहर और इतिहास के बारे में इसी लेख में लिखते हैं कि –
"गाँधी, बुद्ध और अशोक देश की शोभा हैं, इसके गौरव है, इस देश के अभिमान है, इस देश के संस्कार है। और इस संस्कार की रक्षा तभी हो सकती है जब राणा प्रताप, गुरु गोविंद सिंह, शिवाजी, महारानी लक्ष्मी बाई, टीपू सुल्तान, अशफाक उस्मान और भगत सिंह की बटालियन हर वक्त तैयार रहे।"[7]
दिनकर आपने काव्य में हमेशा देश को प्रधानता दिए हैं। देश के सामने जब भी मुसीबतें आया हो उस समय दाएं – बाएं का भेद करने से देश कमजोर होगा। आप की विचारधारा दाएं की हो या बाएं की हो, लेकिन देश को आप दोनो की सेवाओं की जरूरत से और देश की रक्षा के काम में विचारधारा का प्रश्न न उठना ही ठीक है–

दिनकर 'परशुराम की प्रतीक्षा' में कहा है –
"झंझा झकझोर पर चढो, मस्त झूलो रे
वृतों पर बन पावक – प्रसन फूलों रे
दाएं – बाएं का द्वंद आज भूलो रे
सामने पड़े जो शत्रु शूल हूलो रे।"[8]

उपोरोक्त कविता के माध्यम से दिनकर देश की रक्षा को महत्त्वपूर्ण माना है। विचारधारा कोई भी हो, देश के ऊपर जब विपत्ति आती है तो सबसे पहले देश को सुरक्षा के प्रति ध्यान देना चाहिए।

दिनकर अपने काव्य में युद्ध की निंदा एवं उसकी अनिर्वार्यता को लेकर बातें करते हैं। दिनकर युद्ध की कारण को बताते हुए लिखते हैं 'युद्ध' कविता में लिखते हैं –

" विविधता सब प्रवाह होती है।
युद्ध के देवता रोते हैं।
दुनिया को एक करने की३ से
युद्ध उत्पन्न होते हैं।"[9]

दिनकर मानते थे कि युद्ध का मुख्य कारण शक्ति और अधिकार की लालसा है। जब कोई व्यक्ति, समुदाय, या राष्ट्र अधिक शक्ति और अधिकार पाने की इच्छा रखता है, तो वह दूसरों पर प्रभुत्व जमाने के लिए युद्ध करता है।दिनकर ने अहंकार और स्वार्थ को भी युद्ध का एक प्रमुख कारण माना है। जब व्यक्ति या राष्ट्र अपने स्वार्थ और अहंकार के चलते दूसरों के अधिकारों की अनदेखी करते हैं, तो संघर्ष की स्थिति उत्पन्न होती है।
दिनकर की रचनाओं में भारतीय संस्कृति और सभ्यता के गौरव का वर्णन है। उनकी कविताओं में इतिहास के गौरवशाली पक्षों का वर्णन किया गया है, जिससे पाठकों में अपने देश और संस्कृति के प्रति गर्व की भावना उत्पन्न होती है। दिनकर की कविताओं में इतिहास के माध्यम से समाज सुधार और न्याय के लिए प्रेरणा मिलती है। उनकी कविताएं केवल अतीत के घटनाओं का वर्णन नहीं करतीं, बल्कि वर्तमान समाज के लिए सबक और प्रेरणा भी देती हैं। दिनकर अपने कविता 'मेरे स्वदेश' में दश भक्ति के बारे में बात करते हुए लिखते हैं –

" छिप जाऊँ कहाँ तुम्हें लेकर?, इस विष का क्या उपचार करूँ?
प्यारे स्वदेश! खाली आऊँ?, या हाथों में तलवार धरूँ?
नारी–नर जलते साथ, हाय!, जलते हैं मांस–रुधिर अपने;
जलती है वर्षों की उमंग, जलते हैं सदियों के सपने!
ओ बदनसीब! इस ज्वाला में, आदर्श तुम्हारा जलता है,
समझायें कैसे तुम्हें कि, भारतवर्ष तुम्हारा जलता है?
जलते हैं हिन्दू–मुसलमान, भारत की आँखें जलती हैं,
आनेवाली आजादी की, लो! दोनों पाँखें जलती हैं।
आदर्श अगर जल खाक हुआ, कुछ भी न शेष रह पायेगा;
मन्दिर के पास पहुँच कर भी, भारत खाली फिर जायेगा।"[10]

रामधारी सिंह 'दिनकर' की कविता 'मेरे स्वदेश' में भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के समय की एक प्रखर देशभक्ति से ओत–प्रोत रचना है। यह कविता न केवल उनके गहन देशप्रेम को अभिव्यक्त करती है, बल्कि भारतीय जनता के भीतर सोई हुई राष्ट्रीय चेतना को जागृत करने का प्रयास भी करती है। इस कविता में दिनकर ने अपने देश के लिए असीम प्रेम, बलिदान की भावना और स्वतंत्रता की आकांक्षा को शब्दों में पिरोया है। इस कविता के माध्यम से देशवासियों को एक प्रेरणादायक और जोशीली रचना है, जो पाठकों के दिलों में देशभक्ति की भावना को जागृत करती है। दिनकर की यह रचना स्वतंत्रता संग्राम के समय के उस जोश और उत्साह का प्रतीक है, जिसने देश के हर नागरिक को स्वतंत्रता के लिए संघर्ष करने के लिए प्रेरित किया।
दिनकर के रचनाओं में दिखाई देने वाली राष्ट्रीयता, सामाजिकता, समरसता की भावना किसी उन्माद की भावना नहीं है बल्कि उसमें दिखने वाली अग्निगार्भिता इतिहास बोध से संयमित है। उनके कविता में राष्ट्रीय गौरव के साथ–साथ एक मंगलमयी राष्ट्र की भावना भी प्रकट होती है। दिनकर अपने देश की महानता, उसकी संस्कृति, और उसकी धरोहरों पर गर्व करते हैं और इसे सहेजने और संवारने का संकल्प लेते हैं। वे इतिहास की अमर गाथा को याद करते हुए 'हिमालय' कविता में लिखते हैं–

" पूछे सिकता–कण से हिमपति!,तेरा वह राजस्थान कहाँ?
वन–वन स्वतंत्रता–दीप लिये, फिरनेवाला बलवान कहाँ?
तू पूछ, अवध से, राम कहाँ?, वृंदा! बोलो, घनश्याम कहाँ?
ओ मगध! कहाँ मेरे अशोक?,वह चंद्रगुप्त बलधाम कहाँ ?
पैरों पर ही है पड़ी हुई, मिथिला भिखारिणी सुकुमारी,
तू पूछ, कहाँ इसने खोयीं, अपनी अनंत निधियाँ सारी?
री कपिलवस्तु! कह, बुद्धदेव, के वे मंगल–उपदेश कहाँ?
तिब्बत, इरान, जापान, चीन, तक गये हुए संदेश कहाँ?
वैशाली के भग्नावशेष से, पूछ लिच्छवी–शान कहाँ?
ओ री उदास गंडकी! बता, विद्यापति कवि के गान कहाँ?
तू तरुण देश से पूछ अरे, गूँजा कैसा यह ध्वंस–राग?
अंबुधि–अंतस्तल–बीच छिपी, यह सुलग रही है कौन आग?"[11]

दिनकर की रचना इतिहास से जुडी हुई है। दुसरे विश्वयुद्ध के बाद विश्व में उपजनेवाली मानवीय संकट पर उनकी रचना मुखरित हो कर सवाल उठाती है। तत्कालीन विसंगतियां दिनकर की मन को वैचेन करते हुए सवाल करती है क्या यह वही देश है जिसमें कभी गौतम बुद्ध जैसे ज्ञानी एवं गुणी सारे विश्व में विश्व शांति की सन्देश दिया करता था। जिस देश में कभी मर्यादापुरुष राम जैसे वीर हुआ करते थे। दिनकर अतीत से जुड़ते हुए वर्तमानकालीन परिस्थिति को देखते हुए सवाल करते हैं। उनका यह सवाल सिर्फ सवाल ही नहीं बल्कि तत्कालीन राजतन्त्र के सामने ज्वलंत मुद्दें रखते हैं, जिससे सरकार अक्सर बचना चाहती है।

निष्कर्ष

रामधारी सिंह 'दिनकर' की रचनाओं में इतिहास बोध का गहरा और विस्तृत चित्रण मिलता है। उनकी कविताओं और गद्य

रचनाओं में भारतीय इतिहास, संस्कृति, और परंपराओं का समावेश बहुत ही सजीव और प्रभावशाली ढंग से हुआ है। दिनकर ने इतिहास का उपयोग केवल एक कथात्मक उपकरण के रूप में नहीं किया, बल्कि इसके माध्यम से वर्तमान सामाजिक, राजनीतिक और नैतिक सवालों को संबोधित किया। दिनकर की रचनाओं में इतिहास केवल अतीत का पुनरावलोकन नहीं है, बल्कि समाज सुधार का एक उपकरण भी है। वे इतिहास से सबक लेकर वर्तमान समाज की समस्याओं का समाधान ढूंढने की कोशिश करते हैं। उनकी रचनाओं में सामाजिक अन्याय, शोषण, और भ्रष्टाचार के खिलाफ तीव्र प्रतिरोध देखा जा सकता है। वे मानते थे कि इतिहास की समझ के बिना समाज का सुधार संभव नहीं है। दिनकर की रचनाओं में इतिहास बोध का स्वरूप अत्यंत व्यापक और गहन है। उन्होंने इतिहास को न केवल वर्तमान समस्याओं के समाधान के रूप में देखा, बल्कि इसे समाज और संस्कृति की निरंतरता के रूप में भी प्रस्तुत किया। उनकी रचनाओं में इतिहास बोध के माध्यम से भारतीय समाज, संस्कृति, और राष्ट्रीयता की पहचान को सुदृढ़ करने का प्रयास किया गया है। इस प्रकार, दिनकर के साहित्य में इतिहास बोध एक महत्वपूर्ण तत्व के रूप में उभरता है, जो उनके काव्य और गद्य दोनों को एक गहरी और समृद्ध पृष्ठभूमि प्रदान करता है।

सन्दर्भ

1. लाल बहादुर वर्मा, इतिहास के बारे मे, साहित्य उपक्रम, इलाहाबाद, 1984, प. 21.
2. Mushin Mahdi, Ibn Khaldun's Philosophy of History: A Study in the Philosophic Foundation of Science of Culture, Rotledge, London, 2016, 286.
3. Arthur Marwick, What History is? P. 14
4. Mushin Mahdi, Ibn Khaldun's Philosophy of History: A Study in the Philosophic Foundation of Science of Culture, Rotledge, London, 2016, 286.
5. दिनकर रचनावली, नन्द किशोर नवल, लोक भारती प्रकाशन, इलाहबाद, खंड –8, पृष्ठ–241
6. दिनकर रचनावली, नन्द किशोर नवल, लोक भारती प्रकाशन, इलाहबाद, खंड –8, पृष्ठ–241
7. दिनकर की डायरी – 1970
8. शेष निशेष, राज्य सभा में 1963 दिया गया भाषण
9. दिनकर रचनावली, नन्द किशोर नवल, लोक भारती प्रकाशन, इलाहबाद, खंड –8, पृष्ठ–387
10. दिनकर रचनावली, नन्द किशोर नवल, लोक भारती प्रकाशन, इलाहबाद, खंड –8, पृष्ठ–181
11. दिनकर रचनावली, नन्द किशोर नवल, लोक भारती प्रकाशन, इलाहबाद, खंड –8, पृष्ठ–67